महिला सशक्तिकरण एवं ज्योतिबा फूले

डॉ. मनोज कुमार शर्मा

ज्योतिबा फूले केवल शूद्रादिशूद्रों के लिए ही वे प्रतिबद्ध नहीं थे, अपितु सवर्णों में जो घृणित रूढ़ियाँ थीं, उसके खिलाफ भी सक्रिय थे। 'विधवा विवाह' का उन्होंने समर्थन किया।कुमारी माताएँ अथवा होने के बाद की माताएँ इनकी संततियों को पालने के लिए उन्होंने विशेष व्यवस्था की। स्त्रियों की शिक्षा के लिए 1848 ई. में प्रथम स्कूल चलाए। किसानों पर होनेवाले अन्यायों के विरोध में उनका संघटन बनाना शुरू किया। वास्तव में दलित, पीड़ित, श्रमिक और उपेक्षित स्त्री– पुरूष को उनके न्यायिक अधिकार दिला देने के लिए वे कृतसंकल्प थे। इसी कारण श्री रावसाहेब कसबेजी ने निष्कर्ष निकाला है कि "19 वीं शदी का महात्मा फुले का आंदोलन मूलतः वर्गीय आन्दोलन था।"